अमर उजाला

इलाहाबाद, रविवार, 27 फरवरी, 2005

प्रस्तुति : प्रयाग संगीत समिति में शनिवार को कोलकाता की महुआ शंकर ने कथक पेश किया। (खबर पेज 6 पर)

आज

हिन्दी जगतमें सर्वाधिक लोकप्रिय

प्रकाशनका ८५ वां वर्ष

इलाहाबाद रविवार २७ फरवरी, २००५ सौर १५ फाल्गुन सं. २०६१ वि.

नगर संस्करण १२ + ४ पृष्ठ , दो रुपये

...ऐसो ढीठ बरबस मोरी लाज लीन्हीं

❑महुआ शंकरने कथक एवं इरशाद खानने सितारकी धुनसे समां बांधी

प्रयाग संगीत समितिके प्रेक्षागृहमें आयोजित ४७वें अखिल भारतीय संगीत सम्मेलनमें आजकी शाम प्रख्यात कथक नर्तक बिरजू महाराजकी शिष्या महुआ शंकरके कथक नृत्य एवं एटवा घरानेके इरशाद खानके सितारवादन के नाम रहा।

पहली प्रस्तुति महुआ शंकरके कथक नृत्य से हुई। उन्होंने अपना कार्यक्रम अर्द्धनारीश्वरसे शुरू किया। जिसके बोल थे 'अर्द्धंग भस्म भभूत सोहे, अर्द्ध मोहिनी रूपहै'। फिर उन्होंने तीन ताल विलम्बितमें थाट, आमद, परन तिहाइयां और तीन ताल मध्य लयमें तिहाइयां, लड़ियां, परन, टुकड़े आदि पेश किया। साथ ही उन्होंने रूपक तालमें परन, परमेलू, टुकड़ा, तिहाइ, उपज आदि प्रस्तुत किया। इसके अलावा उन्होंने 'काहे-काहे छेड़-छेड़ मोहे गरवा लगाये नन्दको लाल ऐसो ढीठ बरबस मोरी लाज लीन्हीं' ठुमरी की भी आकर्षक प्रस्तुति की। लय और तालमें अच्छा सामंजस्य देख दर्शक मंत्रमुग्ध हुए। उनके साथ संगतकारोंमें तबलेपर उत्पल घोषाल , सारंगी पर गुलाम वारिस, सितारपर चन्द्रचूड़ भट्टाचार्या रहे। कार्यक्रमका संचालन डा. मधु शुक्लाने किया।

अखिल भारतीय संगीत सम्मेलनकी दूसरी प्रस्तुति एटवा घरानेके इरशाद खानकी सितारवादन रही। उन्होंने रागरागेश्वरीको मध्य तालमें बजाया। फिर उन्होंने मसीतखानी, रजाखानी, झाले, तोड़े आदिकी धुन छेड़ी। उन्होंने इसके अलावा तिलक कामोदमें राग भटियार और राग पीलूमें दादरा, रागमाला बजाया जबकि उनकी अन्तिम प्रस्तुति राग भैरवी रही। उनके साथ तबलेपर अकरमने संगत किया।